International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

पुस्तकालयों में छात्रों के व्यवहार की जानकारी प्राप्त का अध्ययन

विनोद सिंह
शोधकर्ता, सरदारपटेल विश्वविद्यालय बालाघाट (म.प्र.)

डॉ. देबदास मंडल
शोध पर्यवेक्षक, सरदारपटेल विश्वविद्यालय बालाघाट (म.प्र.)

सारांश

पुस्तकालय निस्संदेह मूल्यवान जानकारी के भंडार हैं और ज्ञान के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में कार्य करते हैं, जिसमें विविध प्रकार की सामग्री होती है जो इसके उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करती है। लाइब्रेरियन पुस्तकालय के भीतर संग्रह वृद्धि की देखरेख करने की भूमिका निभाता है, जिससे पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं की मांगों, अपेक्षाओं और आवश्यकताओं पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। सूचना से संबंधित कई पहलुओं पर एक व्यापक शोध करने की आवश्यकता है, जिसमें इसकी आवश्यकता, उपयोगकर्ताओं की सूचना आवश्यकताओं का समय, सटीक जानकारी प्राप्त करने के लिए उनके द्वारा किए जाने वाले उपाय, स्रोतों का पता लगाने में उपयोगकर्ताओं के बीच सूचना साक्षरता का स्तर और सूचना पुनर्प्राप्ति प्रक्रिया के दौरान आने वाली चुनौतियाँ। सूचना प्रणाली और सेवाओं (आईएसएस) का उपयोग इन पहलुओं की जांच की सुविधा प्रदान करता है और पुस्तकालय सेटिंग्स के भीतर संचालन की दक्षता को बढ़ाता है।

मुख्यशब्द:- पुस्तकालय, छात्रों के व्यवहार, सूचना साक्षरता, सूचना पुनर्प्राप्ति प्रक्रिया

प्रस्तावना

पुस्तकालय सूचना वितरण और उपभोग के गतिशील क्षेत्र में आवश्यक संस्थानों के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, ज्ञान के व्यापक संग्रह के संरक्षक के रूप में कार्य करते हैं। अपने उद्देश्य को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए, पुस्तकालयों के पास न केवल सामग्रियों की एक विस्तृत श्रृंखला होनी चाहिए, बल्कि यह भी समझ होनी चाहिए कि उपयोगकर्ता जानकारी को कैसे खोजते हैं, एक्सेस करते हैं और उसका उपयोग कैसे करते हैं। इस अवधारणा की समझ सूचना खोज व्यवहार (आईएसबी) के क्षेत्र के अंतर्गत शामिल है। यह व्यापक प्रवचन पुस्तकालय सेटिंग्स के भीतर सूचना चाहने वाले व्यवहार

(आईएसबी) को समझने की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर प्रकाश डालता है, यह उन कई तरीकों को स्पष्ट करता है जिनमें यह समझ पुस्तकालयों के मौलिक संचालन की नींव बनाती है और उन्हें उनकी निरंतर विकसित होने वाली सूचना आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाती है।

पुस्तकालयों में व्यवहार जानने वाली की आवश्यकता और महत्व

1. सूचना परिदृश्य का विकास:

डिजिटल युग के आगमन ने सूचना उत्पन्न करने, वितरित करने और उपभोग करने के तरीके में मौलिक परिवर्तन लाया है। पुस्तकालय, जो ऐतिहासिक रूप से मूर्त संग्रह से जुड़े हुए हैं, को विकसित हो रहे सूचना वातावरण के अनुकूल होने के लिए मजबूर किया गया है। इस क्षेत्र में चल रहे परिवर्तनों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए पुस्तकालयों के लिए सूचना प्रणाली और प्रौद्योगिकी (आईएसबी) की व्यापक समझ हासिल करना महत्वपूर्ण है। ऑनलाइन संसाधनों का प्रसार, डिजिटल प्रौद्योगिकी में प्रगति, और कई प्लेटफार्मों पर जानकारी की व्यापक उपलब्धता इस बात की व्यापक समझ की आवश्यकता को रेखांकित करती है कि लोग विभिन्न प्रारूपों में जानकारी के साथ कैसे जुड़ते हैं।

2. उपयोगकर्ता-केंद्रित दृष्टिकोण:

पुस्तकालय स्वाभाविक रूप से अपने उपयोगकर्ताओं की जरूरतों को पूरा करने पर केंद्रित होते हैं, और इस उपयोगकर्ता-केंद्रित दृष्टिकोण के मूल में लोगों के सूचना प्राप्त वाले व्यवहार को समझना है। आईएसबी द्वारा किए गए अध्ययन पुस्तकालयों को उपयोगकर्ता की प्राथमिकताओं, आदतों और अपेक्षाओं के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करते हैं। यह समझ पुस्तकालयों को उनकी उपयोगकर्ता आबादी की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी सेवाओं, संग्रहों और इंटरफेस को अनुकूलित करने के लिए सशक्त बनाती है, जिससे एक ऐसा माहौल बनता है जहां उपयोगकर्ता खुद को स्वीकृत, समझे जाने वाले और समायोजित के रूप में देखते हैं।

3. संग्रह विकास का अनुकूलन:

किसी पुस्तकालय के संग्रह की प्रभावशीलता सूचना के केंद्रीय केंद्र के रूप में उसके कार्य के लिए महत्वपूर्ण है। सूचना खोज व्यवहार (आईएसबी) की समझ पुस्तकालयों को उनके संग्रह निर्माण

विधियों के अनुकूलन में सहायता करती है। पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं की विशिष्ट सूचना आवश्यकताओं, सूचना तक पहुँचने के लिए उनके पसंदीदा रूपों और पुस्तकालय संसाधनों का उपयोग करने की नियमितता का विश्लेषण करके, पुस्तकालय रणनीतिक रूप से ऐसे संग्रह बना सकते हैं जो व्यापक हों और उनके ग्राहकों की सूचना संबंधी मांगों को पूरा करने के लिए तैयार हों। इस केंद्रित रणनीति का कार्यान्वयन उनके संबंधित समुदायों के भीतर पुस्तकालयों के निरंतर महत्व और मूल्य की गारंटी देता है।

4. संसाधन आवंटन और बजटिंग:

पुस्तकालय उपलब्ध संसाधनों द्वारा लगाई गई सीमाओं के तहत कार्य करते हैं, और उनकी दीर्घकालिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के लिए संसाधनों का कुशल उपयोग महत्वपूर्ण है। सूचना प्रणाली और व्यवसाय (आईएसबी) की व्यापक समझ होने से व्यक्तियों को संसाधनों के आवंटन और बजट बनाने के मामले में अच्छी तरह से सूचित निर्णय लेने में मदद मिलती है। सबसे अधिक उपयोगकर्ता मांग वाले क्षेत्रों के व्यापक ज्ञान के माध्यम से, पुस्तकालय प्रासंगिक सामग्रियों की खरीद, तकनीकी बुनियादी ढांचे में निवेश और कर्मचारियों के प्रशिक्षण की सुविधा के लिए रणनीतिक रूप से अपने वित्तीय संसाधनों को खर्च कर सकते हैं। यह अभ्यास ग्राहकों की खुशी और जुड़ाव को अधिकतम करने के लिए संसाधनों के कुशल उपयोग की गारंटी देता है।

5. प्रौद्योगिकी एकीकरण और पहुंच:

सूचना पहुंच पर प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रभाव वाले समकालीन युग में, तकनीकी समाधानों के निर्बाध एकीकरण की सुविधा के लिए सूचना प्रणाली (आईएसबी) की व्यापक समझ होना आवश्यक है। पुस्तकालयों को ऐसे खोज इंटरफेस के प्रावधान को प्राथमिकता देनी चाहिए जो सहज और उपयोग में आसान हों, ऑनलाइन डेटाबेस तक सुचारू पहुंच सुनिश्चित करें और डिजिटल टूल को शामिल करें जो उनके ग्राहकों की रुचियों और आदतों के अनुरूप हों। पुस्तकालयों को उन तकनीकों के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि मिलती है जो आईएसबी की व्यापक समझ के माध्यम से सूचना पहुंच में सुधार करने में सबसे प्रभावी हैं।

6. सूचना साक्षरता पहल:

पुस्तकालयों का मुख्य उद्देश्य सूचना साक्षरता को बढ़ावा देना है। सूचना साक्षरता की अवधारणा लोगों को महत्वपूर्ण मूल्यांकन, उपयोग और सूचना के सृजन में कुशल तरीके से संलग्न होने में सक्षम बनाती है। सूचना खोज प्रक्रिया (आईएसपी) की व्यापक समझ प्राप्त करना केंद्रित सूचना साक्षरता हस्तक्षेपों के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। उपयोगकर्ता जानकारी के साथ कैसे जुड़ते हैं, इसकी समझ हासिल करके पुस्तकालय समुदाय के भीतर सूचना साक्षरता का समर्थन करने की अपनी क्षमता बढ़ा सकते हैं। यह ज्ञान शिक्षण सामग्री, सेमिनार और आउटरीच कार्यक्रमों के विकास को प्रेरित कर सकता है जो उपयोगकर्ताओं की सूचना-प्राप्ति क्षमताओं में विशेष मुद्दों या कमियों को प्रभावी ढंग से लक्षित और हल करते हैं। नतीजतन, पुस्तकालय अधिक सूचना-साक्षर समुदाय को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

7. उपयोगकर्ता जुड़ाव और आउटरीच:

पुस्तकालयों की सफलता तब बढ़ी है जब वे सक्रिय रूप से अपने उपयोगकर्ता आबादी के साथ जुड़ाव को बढ़ावा देते हैं। प्रभावशाली आउटरीच प्रयासों के निर्माण और कार्यान्वयन में अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसबी) की व्यापक समझ प्राप्त करना महत्वपूर्ण है। पुस्तकालय उन चैनलों और प्लेटफार्मों को समझकर अपनी विज्ञापन रणनीतियों को अनुकूलित कर सकते हैं जिनका उपयोग उपयोगकर्ता ज्यादातर सूचना खोज के लिए करते हैं, जिससे वे अपने इच्छित दर्शकों के साथ सफलतापूर्वक जुड़ने में सक्षम हो सकें। इसमें सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करना, शैक्षिक सामग्री तैयार करना, या पुस्तकालय आगंतुकों द्वारा दिखाए गए सूचना-प्राप्ति पैटर्न के अनुरूप गतिविधियों का समन्वय करना शामिल हो सकता है।

8. संदर्भ सेवाएँ और सहायता:

संदर्भ सेवाएँ किसी पुस्तकालय को उसके संरक्षकों के साथ जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आईएसबी की समझ पुस्तकालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के अनुकूलन की सुविधा प्रदान करती है। उपयोगकर्ता की प्राथमिकताओं, मांगी गई सामग्री में जटिलता के स्तर और खोज प्रक्रिया के दौरान आने वाली सामान्य बाधाओं को समझकर पुस्तकालय अपने कर्मचारियों को सफलतापूर्वक पढ़ा सकते हैं। सूचना चाहने वाले व्यवहार (आईएसबी) के ज्ञान से लैस पुस्तकालयाध्यक्षों के पास उन्नत और अनुरूप समर्थन प्रदान करने की क्षमता होती है, जो उपयोगकर्ताओं को जानकारी के लिए उनकी खोज में प्रभावी ढंग से सहायता करते हैं।

9. उपयोगकर्ता अनुभव को बढ़ाना:

पुस्तकालय सेवाओं की सफलता अनुकूल उपयोगकर्ता अनुभव की उपस्थिति पर निर्भर है। आईएसबी की समझ पुस्तकालयों को असंतोष के क्षेत्रों और उपयोगकर्ता अनुभव में सुधार के अवसरों को समझने में सक्षम बनाती है। सुधार की संभावित रणनीतियों में ऋण आवेदन प्रक्रिया को अनुकूलित करना, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर उपयोगकर्ता अनुभव में सुधार करना, या उपयोगकर्ता इनपुट प्राप्त करने और शामिल करने के लिए सिस्टम स्थापित करना शामिल हो सकता है। उपयोगकर्ता की खुशी को बढ़ावा देने और पुस्तकालय सेवाओं के साथ निरंतर जुड़ाव को बढ़ावा देने के लिए संपूर्ण उपयोगकर्ता अनुभव को बढ़ाना महत्वपूर्ण है।

10. सांस्कृतिक और सामुदायिक प्रासंगिकता:

पुस्तकालय विभिन्न आबादी की जरूरतों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जिनकी सांस्कृतिक तत्वों से प्रभावित विशिष्ट सूचना आवश्यकताएं होती हैं। सूचना खोज व्यवहार (आईएसबी) का अध्ययन पुस्तकालयों को सूचना की खोज में व्यक्तियों द्वारा दिखाए गए विशिष्ट व्यवहारों को समझने में सहायता करता है, विशेष रूप से विविध सांस्कृतिक सेटिंग्स के भीतर। यह अवलोकन पुस्तकालयों को उन संग्रहों को सावधानीपूर्वक चुनने और व्यवस्थित करने की अनुमति देता है जो उसके संरक्षकों की सांस्कृतिक विविधता का सटीक प्रतिनिधित्व करते हैं, जिससे यह गारंटी मिलती है कि उपलब्ध सूचना संसाधन प्रासंगिक और व्यापक हैं।

11. बदलते रुझानों के अनुसार अनुकूलन:

सूचना वातावरण की गतिशील प्रकृति चल रहे तकनीकी विकास, सामाजिक परिवर्तनों और उभरते पैटर्न से आकार लेती है। इंटरनेशनल स्कूल ऑफ बिजनेस (आईएसबी) में किए गए अध्ययन पुस्तकालयों को एक व्यापक और विकसित समझ प्रदान करते हैं कि उपयोगकर्ता इन उपरोक्त विकासों को प्रभावी ढंग से कैसे समायोजित करते हैं। विकासशील प्रवृत्तियों के प्रति अपनी प्रासंगिकता और प्रतिक्रियाशीलता बनाए रखने के लिए पुस्तकालयों के लिए अनुकूलन की क्षमता अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करता है कि उनकी सेवाएँ उनके ग्राहकों की बढ़ती सूचना-प्राप्ति की आदतों के अनुरूप हैं।

12. अनुसंधान और शैक्षणिक सहायता:

अकादमिक पुस्तकालयों के संदर्भ में, कुशल अनुसंधान सहायता की सुविधा के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक पुस्तक संख्या (आईएसबीएन) की व्यापक समझ होना महत्वपूर्ण महत्व रखता है। जानकारी की खोज और उपयोग की प्रक्रिया में छात्रों और शोधकर्ताओं द्वारा उपयोग की जाने वाली पद्धतियों को समझकर, पुस्तकालय शैक्षणिक गतिविधियों को सुविधाजनक बनाने में अपने कार्य को बढ़ा सकते हैं। इसमें ऐसे सेमिनार शामिल हो सकते हैं जो विशेष रूप से रुचि के कुछ क्षेत्रों को संबोधित करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, ऐसे संसाधन जो विशिष्ट अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार किए गए हैं, और ऐसी गतिविधियाँ जो सहयोग को बढ़ावा देती हैं और समग्र अनुसंधान प्रक्रिया में सहायता करती हैं।

13. साक्ष्य-आधारित निर्णय लेना:

आईएसबी अनुसंधान के माध्यम से ज्ञान का अधिग्रहण पुस्तकालयों को अनुभवजन्य साक्ष्य पर आधारित विकल्प चुनने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करता है। पुस्तकालयों में धारणाओं या सामान्य पैटर्न पर भरोसा करने के बजाय डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि का उपयोग करके नीति परिवर्तन, संसाधन आवंटन और सेवा संवर्द्धन को बढ़ाने की क्षमता है। यह विशेष रणनीति निर्णय लेने की प्रक्रियाओं की प्रभावकारिता को बढ़ाने का काम करती है और पुस्तकालय की व्यापक रणनीतिक उन्नति में मूल्यवान योगदान देती है।

पुस्तकालयों में सूचना प्राप्त करने के व्यवहार को समझने का महत्व दोहरा है, जिसमें अंतर्निहित और उपयोगितावादी दोनों पहलू शामिल हैं। सूचना की अधिकता वाले वर्तमान युग में, ज्ञान के संरक्षक के रूप में पुस्तकालयों को न केवल विकसित हो रहे सूचना परिवेश के साथ तालमेल बिठाने की जरूरत है, बल्कि उपयोगकर्ताओं और सूचना के बीच पर्याप्त जुड़ाव को सक्षम करने में भी पहल करनी होगी। आईएसबी में किया गया शोध उपयोगकर्ता के व्यवहार की जटिलताओं में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करके इस नेतृत्व के लिए आधार के रूप में कार्य करता है। पुस्तकालय खुद को ऐसे संस्थानों के रूप में स्थापित करते हैं जो आईएसबी को समझने की तत्काल आवश्यकता को पहचानकर अपने समुदायों की सूचना यात्रा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसा करने पर, वे केवल सूचना के संरक्षक के रूप में अपनी पारंपरिक भूमिका से आगे निकल जाते हैं और गतिशील और उत्तरदायी संस्था बन जाते हैं। समकालीन युग में जब ज्ञान अर्जन का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है, सूचना प्रणाली और प्रौद्योगिकी (आईएसबी) की गहरी समझ रखने वाले पुस्तकालय लोगों और समुदायों दोनों को सशक्त बनाने के

लिए तैनात हैं। ऐसा करके, वे समाज की भलाई के लिए सूचना की परिवर्तनकारी क्षमताओं का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकते हैं।

व्यवहार की मांग करने वाली जानकारी को समझने के लाभ

सूचना प्रसारण और उपभोग के लगातार बदलते क्षेत्र में पुस्तकालयों के लिए सूचना खोज व्यवहार (आईएसबी) की जांच अत्यंत महत्वपूर्ण है। ज्ञान के भंडार और सेवाओं के उत्पादक के रूप में पुस्तकालय हमेशा अपने ग्राहकों की बदलती मांगों को पूरा करने के लिए अपनी पेशकशों में सुधार करने का प्रयास करते हैं। आईएसबी की समझ पुस्तकालयों को उनकी सेवाओं, संसाधनों और बुनियादी ढांचे को अधिक कुशल तरीके से अनुकूलित करने में मदद करती है। यह संपूर्ण प्रवचन पुस्तकालयों में सूचना विज्ञान और ग्रंथ सूची (आईएसबी) का अध्ययन करने के कई फायदों की जांच करेगा, जिसमें इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाएगा कि इस तरह के अध्ययनों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान सूचना प्रसार, उपयोगकर्ता संतुष्टि और पुस्तकालय सेवाओं की सामान्य प्रभावकारिता को कैसे बढ़ाता है।

1. उपयोगकर्ता-केंद्रित सेवा विकास:

किसी विषय वस्तु की समझ और व्याख्या। सेवा विकास में उपयोगकर्ता-केंद्रित दृष्टिकोण को अपनाने की सुविधा आईएसबी द्वारा दी गई है। उपयोगकर्ता की जानकारी प्राप्त और उपभोग के व्यवहार का व्यापक विश्लेषण करके, पुस्तकालय रणनीतिक रूप से अपने संग्रह, डेटाबेस और खोज इंटरफेस को उपयोगकर्ता की प्राथमिकताओं के साथ बेहतर ढंग से अनुकूलित कर सकते हैं। पुस्तकालय संसाधनों का उपयोग न केवल उनकी प्रासंगिकता को मजबूत करने में मदद करता है बल्कि उपयोगकर्ता संतुष्टि में वृद्धि में भी योगदान देता है, जिससे संरक्षक और पुस्तकालय के बीच अनुकूल संबंध बनता है।

2. संग्रह विकास और प्रबंधन:

इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस (आईएसबी) में किए गए शोध से प्राप्त निष्कर्ष मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं जो पुस्तकालयों को उनकी संग्रह विकास रणनीतियों को बढ़ाने में सहायता कर सकते हैं। पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं द्वारा मांगी गई विशिष्ट प्रकार की जानकारी, उनके पसंदीदा रूपों और उपभोग की आवृत्ति को समझकर उपयोगकर्ता की मांगों के अनुरूप संसाधनों की खरीद को प्रभावी ढंग से प्राथमिकता दे सकते हैं। इस केंद्रित रणनीति का कार्यान्वयन यह गारंटी देता है कि पुस्तकालय

का वर्गीकरण अद्यतन, समावेशी और उसके उपयोगकर्ता आबादी की सूचनात्मक आवश्यकताओं के अनुरूप रहता है।

3. संसाधन आवंटन और बजटिंग:

संसाधनों और बजट का कुशल आवंटन पुस्तकालयों की निरंतर प्रभावशीलता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सूचना खोज व्यवहार (आईएसबी) की समझ पुस्तकालयों को वित्तीय संसाधनों के आवंटन पर बुद्धिमानीपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम बनाती है, जिसमें उन क्षेत्रों पर विशेष जोर दिया जाता है जिनका जानकारी प्राप्त करने में उपयोगकर्ताओं के अनुभवों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। इसमें डिजिटल संसाधनों, तकनीकी बुनियादी ढांचे और कार्मिक विकास के लिए आवंटन शामिल है, जो अंततः पुस्तकालय संचालन की समग्र प्रभावकारिता को बढ़ाता है।

4. प्रौद्योगिकी एकीकरण और सूचना पहुंच:

सूचना के प्रसारण में प्रौद्योगिकी के बढ़ते महत्व को देखते हुए, तकनीकी समाधानों को कुशलतापूर्वक शामिल करने के लिए पुस्तकालयों के लिए सूचना प्रणाली और प्रौद्योगिकी (आईएसबी) की व्यापक समझ होना आवश्यक है।

इसमें खोज इंटरफ़ेस शामिल हैं जो उपयोगकर्ताओं द्वारा आसानी से उपयोग किए जाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, साथ ही ऑनलाइन डेटाबेस और अन्य डिजिटल संसाधन जो लाइब्रेरी ग्राहकों के स्वाद और आदतों के अनुरूप हैं। प्रौद्योगिकी परिवर्तन और उपयोगकर्ता अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय विभिन्न उपयोगकर्ता समूहों के लिए सूचना की सहज पहुंच बनाए रख सकते हैं।

5. सूचना साक्षरता कार्यक्रम:

पुस्तकालय अपने संरक्षकों के बीच सूचना साक्षरता विकसित करने में एक महत्वपूर्ण कार्य पूरा करते हैं। आईएसबी की समझ सूचना साक्षरता पहल के डिजाइन और सुधार में योगदान देती है।

उपयोगकर्ता जानकारी के साथ कैसे जुड़ते हैं, इसका ज्ञान प्राप्त करके, पुस्तकालयों को निर्देशात्मक सामग्री और कार्यशालाएँ प्रदान करने का अवसर मिलता है जो उपयोगकर्ताओं की सूचना-प्राप्ति क्षमताओं में विशेष मुद्दों या कमियों को प्रभावी ढंग से लक्षित करते हैं। नतीजतन, यह क्षमता उपयोगकर्ताओं को जानकारी के विशाल विस्तार को कुशलतापूर्वक ब्राउज़ करने में सक्षम बनाती है।

6. उपयोगकर्ता जुड़ाव और आउटरीच:

सूचना प्रणाली और पुस्तकालयों (आईएसबी) का अध्ययन पुस्तकालयों द्वारा केंद्रित आउटरीच और जुड़ाव रणनीतियों के विकास की सुविधा प्रदान करता है। पुस्तकालय उन चैनलों और प्लेटफार्मों को समझकर अपनी विज्ञापन रणनीतियों को अनुकूलित कर सकते हैं जिन्हें उपयोगकर्ता सूचना खोज के उद्देश्य से चुनते हैं। यह पुस्तकालयों को अपने वांछित दर्शकों को सफलतापूर्वक लक्षित करने में सक्षम बनाता है। इसमें सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करना, शैक्षिक सामग्री तैयार करना, या पुस्तकालय आगंतुकों की जानकारी प्राप्त करने की प्रवृत्ति के अनुरूप गतिविधियों का समन्वय करना शामिल हो सकता है।

7. सेवाएँ और सहायता:

संदर्भ सेवाओं के लिए पुस्तकालय केंद्रीय केंद्र के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और इन सेवाओं की प्रभावशीलता को अधिकतम करने के लिए सूचना खोज व्यवहार (आईएसबी) की व्यापक समझ होना आवश्यक है। पुस्तकालय कर्मियों के कुशल प्रशिक्षण को उपयोगकर्ता की प्राथमिकताओं की व्यापक समझ, वांछित जानकारी की जटिलता और खोज प्रक्रिया के दौरान आने वाली विशिष्ट कठिनाइयों से सुगम बनाया जा सकता है। सूचना प्राप्त वाले व्यवहार (आईएसबी) के ज्ञान और समझ से लैस पुस्तकालयाध्यक्ष उन्नत और प्रभावी समर्थन प्रदान कर सकते हैं, जिससे उपयोगकर्ताओं को जानकारी की तलाश में सुविधा मिल सके।

8. उपयोगकर्ता अनुभव को बढ़ाना:

उपयोगकर्ता अनुभव पुस्तकालय सेवाओं की प्रभावकारिता निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आईएसबी की परीक्षा के माध्यम से, पुस्तकालयों में उपयोगकर्ता अनुभव को बढ़ाने के लिए असंतोष के क्षेत्रों और अवसरों को समझने की क्षमता होती है। सुधार की संभावित रणनीतियों में उधार लेने की प्रक्रिया को अनुकूलित करना, वेब इंटरफेस के माध्यम से बेहतर उपयोगकर्ता अनुभव, या उपयोगकर्ता प्रतिक्रिया एकत्र करने और शामिल करने के लिए सिस्टम जोड़ना शामिल हो सकता है। उपयोगकर्ता की खुशी को बढ़ावा देने और पुस्तकालय सेवाओं के साथ निरंतर भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए संपूर्ण उपयोगकर्ता अनुभव को बढ़ाना महत्वपूर्ण है।

9. सांस्कृतिक और सामुदायिक प्रासंगिकता:

पुस्तकालय अक्सर सांस्कृतिक तत्वों से प्रभावित विशिष्ट सूचना आवश्यकताओं की विशेषता वाली विषम आबादी को पूरा करते हैं। सूचना खोज व्यवहार (आईएसबी) का अध्ययन पुस्तकालयों को कई सांस्कृतिक सेटिंग्स के भीतर जानकारी चाहने वाले व्यक्तियों द्वारा दिखाए गए विशिष्ट व्यवहारों को समझने में सहायता करता है। यह अवलोकन पुस्तकालयों को उन संग्रहों को सावधानीपूर्वक चुनने और व्यवस्थित करने की अनुमति देता है जो उसके संरक्षकों की सांस्कृतिक विविधता का सटीक प्रतिनिधित्व करते हैं, जिससे यह गारंटी मिलती है कि उपलब्ध सूचना संसाधन प्रासंगिक और समावेशी दोनों हैं।

10. बदलते रुझानों के अनुसार अनुकूलन:

सूचना परिवेश की गतिशील प्रकृति हमेशा प्रौद्योगिकी की प्रगति, सामाजिक गतिशीलता में परिवर्तन और नए रुझानों के उद्भव से आकार लेती है। आईएसबी में किया गया शोध पुस्तकालयों को उस गतिशील तरीके की व्यापक समझ प्रदान करता है जिसमें उपयोगकर्ता इन परिवर्तनों को समायोजित करते हैं। विकासशील प्रवृत्तियों के प्रति अपनी प्रासंगिकता और प्रतिक्रियाशीलता बनाए रखने के लिए पुस्तकालयों के लिए अनुकूलन की क्षमता अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करता है कि उनकी सेवाएँ पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं की बढ़ती सूचना-प्राप्ति की आदतों के अनुरूप हैं।

11. अनुसंधान और शैक्षणिक सहायता:

अकादमिक पुस्तकालयों के संदर्भ में, कुशल अनुसंधान सहायता की सुविधा के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक पुस्तक संख्या (आईएसबीएन) की व्यापक समझ होना महत्वपूर्ण महत्व रखता है। जानकारी की खोज और उपयोग की प्रक्रिया में छात्रों और शोधकर्ताओं द्वारा उपयोग की जाने वाली पद्धतियों को समझकर, पुस्तकालय शैक्षणिक गतिविधियों को सुविधाजनक बनाने में अपने कार्य को बढ़ा सकते हैं। इसमें केंद्रित सेमिनार, अनुकूलित उपकरण और सहकारी प्रयास भी शामिल हो सकते हैं जो अनुसंधान प्रक्रिया को बढ़ाते हैं।

12. साक्ष्य-आधारित निर्णय लेना:

आईएसबी अनुसंधान के माध्यम से ज्ञान का अधिग्रहण पुस्तकालयों को अनुभवजन्य डेटा के आधार पर विकल्प चुनने में सक्षम बनाता है। पुस्तकालयों में धारणाओं या सामान्य पैटर्न पर भरोसा करने के बजाय डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि का उपयोग करके अपनी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं, संसाधन वितरण और सेवा संवर्द्धन को बढ़ाने की क्षमता है। यह पद्धति निर्णय लेने की प्रक्रियाओं की प्रभावकारिता में सुधार करती है और पुस्तकालय की व्यापक रणनीतिक उन्नति को जोड़ती है।

पुस्तकालयों में सूचना खोज व्यवहार को समझने से जुड़े लाभ कई और महत्वपूर्ण हैं। आईएसबी अध्ययनों से प्राप्त अंतर्दृष्टि उपयोगकर्ता-केंद्रित सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करके, संसाधन आवंटन को अनुकूलित करने और सूचना साक्षरता को बढ़ावा देकर पुस्तकालयों की समग्र दक्षता में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। डिजिटल युग के संदर्भ में, प्रासंगिक और अनुकूलनीय पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करने के लिए व्यक्ति कैसे जानकारी खोजते हैं, प्राप्त करते हैं और उसका उपयोग कैसे करते हैं, इसकी व्यापक समझ होना महत्वपूर्ण है। निरंतर अनुसंधान में संलग्न रहने और उपयोगकर्ता की बदलती आदतों के जवाब में अपनी प्रथाओं को समायोजित करने के प्रति समर्पण का प्रदर्शन करके, पुस्तकालय सूचना और ज्ञान के लिए महत्वपूर्ण केंद्रों के रूप में अपने महत्व को प्रभावी ढंग से बनाए रख सकते हैं।

निष्कर्ष

सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों, शैक्षिक संभावनाओं और सांस्कृतिक प्रभावों के बीच एक जटिल अंतःक्रिया है, और अनूपपुर जिले के विशेष संदर्भ में अनुसूचित जनजाति (एसटी) के छात्रों का सूचना-प्राप्ति व्यवहार, इस अंतःक्रिया को दर्शाता है। भारत के मध्य क्षेत्र में स्थित अनूपपुर जिले में अनुसूचित जनजातियों का एक बड़ा समुदाय रहता है। इन व्यक्तियों को सरकार से सूचना संसाधनों तक पहुंच प्राप्त करने और उनका उपयोग करने में विशेष कठिनाइयां होती हैं। स्थानीय पुस्तकालयों और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन संस्थानों में उपलब्ध संसाधनों की मात्रा में वृद्धि होनी चाहिए, और ज्ञान पुस्तकालय के रूप में इन संस्थानों के महत्व के बारे में जागरूकता भी बढ़नी चाहिए। इसके अतिरिक्त, शैक्षिक अवसरों का एसटी के रूप में वर्गीकृत बच्चों के जानकारी प्राप्त के व्यवहार पर काफी प्रभाव पड़ता है। यह स्पष्ट है कि अनूपपुर जिले में शिक्षा के स्तर में महत्वपूर्ण अंतर हैं, कुछ स्कूलों में बुनियादी ढांचे और उच्च कुशल प्रशिक्षकों दोनों का अभाव है। इसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की प्रासंगिक ज्ञान खोजने और प्राप्त करने की क्षमता सीधे तौर पर प्रभावित होती है। यह

उन पहलों के लिए संभव है जिनका उद्देश्य सामान्य शैक्षिक बुनियादी ढांचे, पाठ्यक्रम डिजाइन और शिक्षण तकनीकों में सुधार करना है, जो एसटी के छात्र हैं, उनके सूचना-प्राप्ति व्यवहार पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, शैक्षिक प्रणाली के अंदर आलोचनात्मक सोच और जिज्ञासा की संस्कृति को विकसित करके छात्रों को कक्षा की सीमाओं के बाहर सक्रिय रूप से ज्ञान प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अनवर, एमए (2007)। पाकिस्तान में सूचना की खोज और उपयोग पर शोध: एक आकलन। पाकिस्तान जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस 8: पीपी.15-32।

2. अप्पू, के. (1993)। तमिलनाडु में आवास नीति (अप्रकाशित पीएचडी थीसिस)। चेन्नई: अन्ना सेंटर फॉर पब्लिक अफेयर्स। मद्रास विश्वविद्यालय.

3. अर्कोट, सारदा और इलंगोवन, श्रुति। (2023)। भारत में जनजातीय लोगों के बीच शैक्षिक संक्रमण दर पर एक विश्लेषण भारत में जनजातीय लोगों के बीच शैक्षिक संक्रमण दर पर एक विश्लेषण।

4. आर्मस्ट्रांग, एलए, लॉर्ड, सी. और ज़ेल्टर, जे. (2000)। दक्षिण किंग काउंटी में कम आय वाले निवासियों की सूचना आवश्यकताएँ। सार्वजनिक पुस्तकालय, 39(6), पृ.330-335।

5. आर्या, सरिता. (2012)। जनजातीय शिक्षा का एक आलोचनात्मक अध्ययन: महिलाओं के विशेष संदर्भ में।

6. असेमी, ए (2005), इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की सूचना खोज आदतें: इस्फ़हान, ईरान के मेडिकल साइंसेज विश्वविद्यालय पर एक केस अध्ययन। वेबोलॉजी.2 (1) आलेख 10. http://www.webology.ir/2005/v2n1/a10.html पर उपलब्ध है। 2005.

7. बैद्यनाथ मिश्र. (1996)। ग्रामीण गरीबों को आवास. कुरूक्षेत्र। एक्सएलआईवी (8-9)।

8. बाजपेयी, एन., ढोलकिया, आरएच और सैक्स, जेडी (2005) ग्रामीण भारत में प्राथमिक शिक्षा सेवाओं का विस्तार। सीजीएसडी वर्किंग पेपर श्रृंखला संख्या, 28. न्यूयॉर्क: वैश्वीकरण और सतत विकास केंद्र, कोलंबिया विश्वविद्यालय में पृथ्वी संस्थान।

9. बालगोपालन, एस. और सुब्रमण्यम, आर. (2003) स्कूलों में दलित और आदिवासी बच्चे: कुछ प्रारंभिक शोध विषय और निष्कर्ष। आईडीएस बुलेटिन, 34(1): पीपी 43-54. ब्राइटन: इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज।

10. बंद्योपाध्याय, एम. और सुब्रमण्यन, आर. (2008) शिक्षा में लैंगिक समानता: रुझानों और कारकों की समीक्षा। क्रिएट पाथवे टू एक्सेस सीरीज, रिसर्च मोनोग्राफ नंबर 18। फाल्मर: क्रिएट और यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स।

11. बंसल, तरूणा और होदा, एमडी नुरुल। (2018)। रांची की जनजातीय आबादी का शहरीकरण और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन। एल. 34-47.

12. बाशा, हमीद. (2018)। जनजातीय महिलाओं की साक्षरता दर पर एक समीक्षा: मुद्दे और संभावनाएँ। बहुविषयक अनुसंधान समीक्षा के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल. खंड 4. 108.

13. घोष, सुजीत और चक्रवर्ती, उदीप्त और मित्रा, बुलगानिन। (2018)। दादरा और नगर हवेली, दमन और दीव, भारत के जलीय बीटल जीव, भारतीय प्राणी सर्वेक्षण में राष्ट्रीय संग्रह के एरेटेस ग्रिसियस (फैब्रिसियस 1781) पर वर्गीकरण नोट्स के साथ।

14. भारत सरकार (2006) चयनित शैक्षिक सांख्यिकी, 2003-2004। नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग, योजना, निगरानी और सांख्यिकी प्रभाग।